भारतीय पारंपरिक त्यौहारों में संगीत की भूमिका

प्राप्तिः 21.08.2025
स्वीकृतः 10.09.2025

53

प्रो0 (डॉ.) अनिता रानी
श्रीमती बी० डी० जैन गर्ल्स
पी.जी. कॉलेज (आगरा)
ईमेलः *dr.anita80@gmail.com*

सारांश

भारत एक सांस्कृतिक विविधताओं से सम्पन्न देश है। यहाँ विभिन्न भाषाओं व विभिन्न सम्प्रदायों के लोग एक साथ निवास करते हैं। यहाँ क्षेत्रिय आधार पर तथा धार्मिक आधार पर सांस्कृतिक भिन्नताएँ देखने को मिलती हैं। यहाँ के लोग प्राचीन काल से चली आ रही अपनी परंपराओं के प्रति पूर्ण विश्वास व निष्ठा का भाव रखते हैं। यहाँ की परंपराओं में त्यौहारों का विशेष महत्व है। विभिन्न धर्मों एवं सम्प्रदायों के एक साथ निवास करने के कारण यहाँ त्यौहारों के विभिन्न रूप देखने को मिलते हैं, जिन्हें यहाँ के लोग हर्षोल्लास के साथ मनाते हैं। यहाँ पर विभिन्न प्रकार के पारंपरिक त्यौहार मनाए जाते हैं जैसे– होली, गणेश पूजा, नवरात्रि, बैसाखी, लोहड़ी आदि । ये त्यौहार सदियों से भारत के लोगों के व्दारा पारंपरिक रूप से मनाए जाते हैं। भारत के इन त्यौहारों में संगीत का विशेष महत्व है। त्यौहार यहाँ के लोगों की प्रसन्नता एवं उत्साह की भावना को दर्शाने का कार्य करते हैं। अपनी प्रसन्नता की भावना को यहाँ के लोग संगीत के माध्यम से प्रकट करते हैं। यहाँ के लोग त्यौहार के अवसर पर विभिन्न पारंपरिक गीतों का गायन करते हैं तथा नृत्य करते हैं। इन अवसरों पर विभिन्न लोक वाद्यों का वादन भी किया जाता है। यहाँ के पारंपरिक त्यौहारों में धार्मिक त्यौहारों एवं ऋतु सम्बन्धी त्यौहारों का विशेष महत्व है। धार्मिक त्यौहारों के अवसर पर यहाँ के लोग अपने देवी– देवताओं की आराधना संगीत के माध्यम से करते हैं। इन त्यौहारों के अवसर पर विशिष्ट प्रकार के आयोजन किए जाते हैं जहाँ संगीत का विशिष्ट स्थान होता है। त्यौहार एवं संगीत दोनों ही भारत की संस्कृति के अभिन्न अंग हैं। प्राचीन काल से ही ये दोनों एक–दूसरे से पूर्ण रूप से जुड़े हुए हैं। भारत में बिना संगीत के त्यौहारों के इन स्वरूपों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। संगीत भारत के इन पारंपरिक त्यौहारों की आत्मा है जो इन त्यौहारों को जीवंतता प्रदान करता हैं।

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.53

मुख्य बिन्दु

परंपराओं का अर्थ, भारतीय परंपराएँ, भारत में पारंपरिक त्यौहारों का महत्व, भारतीय पारंपरिक त्यौहारों में संगीत की भूमिका, निष्कर्ष ।

परंपराओं का अर्थ

परंपराओं का अर्थ ऐसी मान्यताओं, रीति– रिवाजों, प्रथाओं एवं विश्वास से माना जाता है जो एक पीढ़ी द्वारा दूसरी पीढ़ी को हस्तान्तरित की जाती हैं। इन प्रथाओं, मान्यताओं व रीति–रिवाजों का किसी समाज में एक विशेष स्थान होता है जो किसी समूह विशेष के सांस्कृतिक स्वरूप को दर्शाने का माध्यम होते हैं। किसी समाज की रीति–रिवाज एवं मान्यताओं के अन्तर्गत वे सामाजिक क्रियाएँ आती हैं जो किसी विशेष अवसर पर सम्पन्न की जाती है जैसे– विवाह, त्यौहार एवं धार्मिक व सामाजिक समारोह आदि। परंपराओं के अन्तर्गत विश्वास का स्थान किसी समाज के लोगों द्वारा अत्यन्त महत्वपूर्ण मानी जाने वाली विचारधारा के रूप में होता है। ये वे विचार होते है तो किसी समाज या समूह द्वारा सत्य माने जाते है जैसे– लोगों का धार्मिक विश्वास व नैतिक मूल्य। इसी प्रकार मान्यताएँ भी किसी समाज के लोगों के विचारों में व्याप्त होती हैं तथा पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती हैं। मान्यताएँ ऐसे विचार होते हैं जो किसी समाज के लोगों द्वारा स्वीकार्य किए जाते हैं, जैसे–सांस्कृतिक मूल्य तथा सामाजिक मानदण्ड। परंपराओं में विभिन्न कहानियाँ तथा किवदंतियाँ भी समाहित होती हैं जो किसी विशेष समाज के ऐतिहासिक व सांस्कृतिक परिदृश्य को दर्शाती हैं तथा मौखिक रूप से पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तान्तरित होती हैं।

भारतीय परंपराएँ

भारत की परंपराएँ यहाँ की समृद्ध विरासत का एक अभिन्न अंग हैं। यहाँ की परंपराओं का इतिहास हजारों वर्षों पुराना हैं तथा यह आज भी देश के सामाजिक, धार्मिक, तथा सांस्कृतिक जीवन के पक्ष में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। भारत की परंपराएँ अपनी समृद्ध विरासत तथा मजबूत पारिवारिक मूल्यों के लिए सम्पूर्ण विश्व में जानी जाती हैं। यहाँ की परम्परा में अनेकता में एकता के दर्शन होते हैं। यहाँ पर विभिन्न भाषाओं एवं सम्प्रदायों के लोग एक साथ निवास करते हैं। इन सभी की अलग– अलग जीवन शैली, खान–पान तथा रीति–रिवाज हैं परन्तु फिर भी यह एक–दूसरे से अभिन्न दिखाई पड़ते हैं। ''यहाँ धर्म और संस्कृति का गहरा सम्बन्ध है, जो लोगों के जीवन, आचार–विचार और लोगों की जीवनशैली को प्रभावित करता है। भारतीय परंपराएँ न केवल धर्म को महत्व देती हैं, बल्कि समाज में एकता, सद्भाव और नैतिक मूल्यों को भी स्थापित करती हैं।''[1] धार्मिक बहुलता भारत की एक विशिष्टता है। यहाँ हिन्दु मुस्लिम, सिख, ईसाई, बौद्ध तथा जैन धर्म के लोग एक साथ निवास करते हैं। इन सभी धर्मों के लोगों की अपनी–अपनी भिन्न सांस्कृतिक विशेषताएँ हैं। भारतीय परंपराओं में पारिवारिक मूल्यों को अत्यधिक महत्व दिया जाता है। यहाँ पर परिवार को समाज की आधारशिला के रूप में माना जाता हैं। प्राचीन काल से ही यहाँ संयुक्त परिवार की परंपरा रही है जहाँ बड़ों का सम्मान करना सिखाया जाता है। पारिवारिक मूल्यों के अन्तर्गत जीवन के विभिन्न अवसरों जैसे– जन्म, विवाह, मृत्यू आदि का विशेष महत्व है। इन अवसरों पर विभिन्न प्रकार की परंपराओं एवं रीति–रिवाजों का प्रचलन है। इन रीति–रिवाजों को विभिन्न संस्कृतियों के लोग

भिन्न प्रकार से मनाते हैं किन्तु इन्हें मनाने का भाव सभी का एक समान होता है। भारत में प्राचीन काल से ही कला एवं संस्कृति की एक समृद्ध परंपरा रही है। यहाँ की कला एवं संस्कृति के अन्तर्गत संगीत, नृत्य, साहित्य तथा वास्तुकला आदि कलाएँ समाहित हैं। प्राचीन काल से ही ये कलाएँ भारत की संस्कृति एवं परम्पराओं को दर्शाने का माध्यम रही हैं। भारत का पारम्परिक खान–पान भी यहाँ की संस्कृति को दर्शाता हैं। यहाँ प्रत्येक प्रान्त का अपना विशिष्ट खान–पान होता है जो उस स्थान की संस्कृति एवं परम्परा को दर्शाता है। भारतीय परंपरा में यहाँ की वेश–भूषा का भी विशिष्ट स्थान है। यहाँ पर लोगों की वेश–भूषा क्षेत्र तथा धर्म के अनुसार भिन्न–भिन्न होती है। यहाँ महिलाएँ अधिक्तर साड़ी, लहंगा, ओढ़नी, सलवार, कुर्ता आदि व पुरुष अधिक्तर धोती– कुर्ता, पगड़ी, पजामा तथा पेंट–शर्ट आदि परिधान पहनते हैं।

भारत में पारंपरिक त्यौहारों का महत्व

भारतीय पारंपरिक त्यौहार यहाँ की संस्कृति का अभिन्न अंग हैं। यहाँ पारंपरिक त्यौहारों का स्थान सांस्कृतिक, धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टिकोण से अत्यन्त महत्वपूर्ण हैं। यहाँ के पारंपरिक त्यौहारों को विविधता में एकता के प्रतीक के रूप में माना जाता है। ये त्यौहार भारत की परंपराओं एवं मूल्यों को सशक्त बनाते हैं। ये त्यौहार भारत के विविध संस्कृति के लोगों को एक सूत्र में बाँधने का कार्य करते हैं। यहाँ विविध धर्मों के लोग त्यौहारों को एक साथ मनाते हैं तथा सम्पूर्ण विश्व को आपसी एकता का संदेश देते हैं। ये त्यौहार भारत की पारंपरिक मान्यताओं को सांस्कृतिक धरोहर के रूप में जीवंत रखने में सहायता करते हैं। भारत में प्राचीन काल से विभिन्न पारंपरिक त्यौहारों का प्रचलन रहा है, जैसे– होली, दीपावली, करवा चौथ, छट पूजा, बैसाखी, जन्माष्टमी, गणेश चतुर्थी, दुर्गा पूजा आदि। ये त्यौहार यहाँ की धार्मिक श्रद्धा एवं विश्वास के परिचायक हैं। त्यौहारों के अवसर पर यहाँ के लोग जाति व धर्म से ऊपर उठकर एक साथ मिल जाते हैं तथा आपसी सौहार्द का संदेश देते हैं, जैसे– होली का त्यौहार एक ऐसा पारंपरिक त्यौहार हैं जिसे विभिन्न सम्प्रदाय के लोग एक साथ मिलकर मनाते हैं। इसी प्रकार दीपावली के त्यौहार को सम्पूर्ण देश मिलकर एक साथ मनाता है। इन त्यौहारों पर अलग–अगल सम्प्रदाय के लोग एक–दूसरे को शुभकामनाएँ देते हैं।

भारतीय पारंपरिक त्यौहारों में संगीत की भूमिका

भारतीय संस्कृति एवं परंपराओं में त्यौहारों का विशेष महत्व हैं। यहाँ पर त्यौहारों को केवल उत्सव के रूप में ही नहीं मनाया जाता है बल्कि यह यहाँ की परंपराओं एवं विश्वास का प्रतीक हैं। ये त्यौहार यहाँ के लोगों के हृदय को प्रसन्नता से भर देते हैं। प्राचीन काल से ही यहाँ के लोग अपनी प्रसन्नता को त्यौहार व उत्सव के रूप में मनाते हैं तथा इन त्यौहारों एवं उत्सवों को मनाने के लिए संगीत का उपयोग करते हैं। संगीत प्राचीनकाल से ही यहाँ के त्यौहारों एवं उत्सवों का प्रमुख अंग रहा है। संगीत को यहाँ के त्यौहारों की आत्मा के रूप में माना जाता है। संगीत इन त्यौहारों को जीवंतता, आध्यात्मिकता तथा सामुदायिक सौहार्द प्रदान करता है। भारत में संगीत उत्सवों एवं त्यौहारों का अनिवार्य अंग है। भारत में संगीत को आध्यात्मिकता का आधार माना जाता है। प्राचीन काल से ही यहाँ धार्मिक अनुष्ठानों व पूजा–पाठ आदि के समय संगीत का प्रयोग किया जाता है। संगीत के साथ वेद मन्त्रों का उच्चारण यहाँ की प्राचीन परंपरा रही है। वर्तमान समय में भी यहाँ

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.53

प्रत्येक तीज–त्यौहार एवं धार्मिक कार्यों में संगीत का प्रयोग होता है। त्यौहारों के अवसर पर स्त्रियों एवं पुरुषों द्वारा विभिन्न प्रकार के गीत गाये जाते हैं तथा वाद्यों का वादन किया जाता है। भारत में प्रत्येक प्रान्त में तथा धर्मों में विभिन्न त्यौहारों को मनाया जाता है जिनमें संगीत की एक विशिष्ट भूमिका रहती हैं, जैसे– होली, दीपावली, गणेश चतुर्थी, नवरात्री, पोंगल, बैसाखी, लोहड़ी तथा गणगौर आदि। इनमें से कुछ त्यौहारों में संगीत की भूमिका को इस प्रकार दर्शाया गया है–

होली

होली भारत का एक प्रमुख त्यौहार है। ये त्यौहार आपसी एकता एवं प्रेम–भाव का प्रतीक है। इस उत्सव पर लोग एक दूसरे के रंग तथा गुलाल लगाते हैं तथा जीवन को रंगों की तरह खूबसूरत होने की कामना करते हैं। वैसे तो होली का त्यौहार सम्पूर्ण भारत में मनाया जाता है परन्तु ब्रज की होली सम्पूर्ण विश्व में प्रसिद्ध है। ब्रज में होली के त्यौहार का विशेष महत्व है। यहाँ होली के अवसर पर विशेष प्रकार के गीतों का गायन किया जाता है जैसे–फाग, होली, रसिया व धमार। फाग ब्रज प्रान्त का होली के उत्सव पर गाया जाने वाला एक विशिष्ट गीत है। फाग का गायन होली के महीने अर्थात फाल्गुन के महीने में किया जाता है। इसका गायन यहाँ के ग्रामीण लोगों द्वारा मंडली बनाकर किया जाता है। होली के उत्सव पर लोग ढोलक व मंजीरा बजाते हुए फाग गाते हैं तथा त्यौहार का आनन्द लेते हैं। ''यह क्रम फाल्गुन पूर्णिमा यानि होली तक चलता रहता है। इस दिन फगुआरों की टोली लोगों संग अबीर, गुलाल खेलकर उत्सव भी मनाती है''[2] होली त्यौहार पर गाया जाने वाला एक गीत का प्रकार होली या होरी कहलाता है। यह गीत दीपचन्दी ताल में तथा अधिक्तर काफी राग में गाया जाता है। इसका गायन ठुमरी के समान होता हैं। इस गीत में अधिक्तर राधा व कृष्ण की लीलाओं का वर्णन होता है। रसिया भी होली के त्यौहार पर गाया जाने वाला एक गीत का प्रकार है। ब्रज में होली के उत्सव पर रसिया गायन का विशेष महत्व है। इसमें राधा व कृष्ण की होली की लीलाओं का वर्णन होता है। ब्रज की होली में धमार गायन का भी विशेष महत्व है। गीत की यह शैली एक प्राचीन गायन शैली है। ''इसमें अधिक्तर राधा कृष्ण और गोपियों अथवा ब्रज की होली का वर्णन मिलता है।''[3] धमार गायन शैली शास्त्रीय संगीत की एक विशिष्ट शैली है। इन गीतों के साथ विभिन्न प्रकार के वाद्यों का वादन किया जाता है। यहाँ के लोग ढोलक, ढोल, मंजीरा, चिमटा, घुंघरू, पखावज आदि वाद्यों को बजाते हुए इन गीतों का गायन करते हैं।

नवरात्रि

भारत में नवरात्रि के उत्सव का विशेष महत्व है। इस उत्सव को देवी दुर्गा की पूजा के लिए महत्वपूर्ण पर्व माना जाता है। यह उत्सव नौ दिनों तक चलता है तथा भारत के अलग–अलग भागों में इसे भिन्न–भिन्न प्रकार से मनाते हैं। नवरात्रि के इस त्यौहार में संगीत एवं नृत्य का विशेष महत्व है। भारत के गुजरात व महाराष्ट्र प्रान्त में नवरात्रि के इस पर्व पर गरबा तथा डांडिया नृत्य का विशेष महत्व है। गरबा तथा डांडिया भारत के पारंपरिक नृत्यों में से हैं। इन नृत्यों में स्त्री एवं पुरुष रंगीन वेश–भूषा धारण करते हैं तथा ताली या डांडिये को बजा–बजा कर गोल घेरे में नृत्य करते हैं। गरबा तथा डांडिया नृत्य को पारंपरिक गीतों पर किया जाता है। इन नृत्यों में लोग, गोल घेरे में लय बद्ध तरीके से घूमते हैं तथा जटिल पदचाप करते हैं। नवरात्रि का उत्सव पश्चिम बंगाल में विशेष रूप से मनाया जाता है।

यहाँ नवरात्रि के उत्सव पर देवी के बड़े–बड़े पंडाल सजाए जाते हैं तथा देवी दुर्गा की बड़ी–बड़ी मूर्तियाँ वहाँ स्थापित की जाती हैं। इन पंडालों में नवरात्रि के नौ दिन नृत्य संगीत का आयोजन होता है तथा संगीत की धुन एवं ताल पर लोग भक्ति में झूमते हैं। भारत के उत्तर प्रदेश राज्य में भी नवरात्रि का उत्सव धूम–धाम से मनाया जाता है। इन नौ दिनों में यहाँ जगह–जगह माता के भजन व भेंटे आदि का गायन किया जाता है। लोग इन नौ दिनों में माता रानी के व्रत करते हैं तथा भजन व गीत आदि के माध्यम से माँ दुर्गा को याद करते हैं। नवरात्रि के त्यौहार पर यहाँ माता की भेटें तथा लंगुँरिया का गायन किया जाता है। यहाँ का वातावरण नौ दिन तक गीत–संगीत में डूबा रहता है।

बैसाखी

बैसाखी का त्यौहार भारत के पंजाब प्रान्त के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। इस त्यौहार का संगीत के साथ घनिष्ठ सम्बन्ध है। बैसाखी का त्यौहार फसल के पकने की खुशी के लिए मनाया जाता है। इस प्रसन्नता के अवसर पर यहाँ के लोग नाचते, गाते हैं तथा इस उत्सव को मनाते हैं। इस अवसर पर पारंपरिक पंजाबी लोक संगीत का गायन किया जाता है। इस दौरान गुरुद्वारों में शबद, कीर्तन गाये जाते हैं। जगह–जगह लोग छोटे– बड़े समूहों में इस त्यौहार को संगीत व नृत्य के माध्यम से मनाते हैं। इस अवसर पर यहाँ के लोगों द्वारा भांगड़ा तथा गिद्दा नृत्य किया जाता है तथा ढोलक, ढोल आदि की थाप पर लोग झूमते तथा गाते हैं।

लोहड़ी

लोहड़ी त्यौहार भी पंजाब प्रान्त के प्रमुख त्यौहारों में से एक है। इस त्यौहार पर विशिष्ट पारंपरिक लोक गीतों का गायन किया जाता है जैसे– सुंदर मुंदरिए। ये पारंपरिक लोक गीत इन त्यौहारों का अभिन्न अंग हैं। इन गीतों का सम्बन्ध दुल्ला भट्टी की कहानी व फसलों के मौसम से होता है। इस अवसर पर लोग रात के समय अपने घरों के बाहर अलाव जलाकर उसकी परिक्रमा करते हैं तथा उसमें तिल, गुड़ व रेवड़ी डालते हैं तत्पश्चात सभी लोग संगीत की धुन पर नाचते हैं तथा भांगड़ा व गिद्दा नृत्य करते है। इस अवसर पर नई फसल की गेहूँ की कुछ बालियों को अग्नि में डालते हैं तथा पूजा करते हैं।

गणेश चतुर्थी

गणेश चतुर्थी का त्यौहार भारत के पारंपरिक त्यौहारों में से एक है। गणेश चतुर्थी का त्यौहार भारत में विभिन्न स्थानों पर मनाया जाता है परन्तु महाराष्ट्र प्रान्त में इस त्यौहार का विशेष महत्व है। इस त्यौहार का व संगीत का घनिष्ठ सम्बन्ध है। इस त्यौहार पर भगवान गणेश का आगमन होता है। यहाँ के लोग टोलियाँ बनाकर नाचते, गाते तथा ढोल बजाते हुए भगवान गणेश की प्रतिमा को घर लाते हैं तथा कुछ दिनों तक अपने घर पर उनकी पूजा, अर्चना तथा सेवा करते हैं। इन दिनों में यहाँ पर गीत, संगीत का माहौल होता है। लोग भगवान गणेश जी की भक्ति में डूब कर भजन, कीर्तन करते हैं। इस दौरान गणेश जी की संगीतमय आरती का गायन किया जाता है। यहाँ पर जगह–जगह गणेश जी के पंडाल लगाये जाते हैं तथा लोग भजन, कीर्तन व नृत्य के माध्यम से भगवान को प्रसन्न करते हैं। इस दौरान भक्ति एवं संगीत के एक अनूठे आध्यात्मिक वातावरण का निर्माण होता है जो हमारे देश की धार्मिक संस्कृति को दर्शाता है। कुछ दिनों के पश्चात यहाँ के लोग ढोल, नगाड़े, शहनाई, झांझ, मंजीरे आदि वाद्यों को बजाते हुए तथा नृत्य करते हुए भगवान गणेश की

https://doi.org/10.31995/shodhmanthan.2025.v16i03.53

प्रतिमा का विसर्जन करते हैं। इस त्यौहार पर संगीत के विशिष्ट आयोजन किए जाते हैं। संगीत को इस त्यौहार की आत्मा के रूप में माना जाता है।

पोंगल

पोंगल, भारत के तमिलनाडू प्रान्त का एक प्रमुख पारंपरिक त्यौहार है। इसे भारत के अन्य राज्यों जैसे– कर्नाटक, आन्ध्र प्रदेश व केरल में भी मनाया जाता है। ये त्यौहार जनवरी माह में पड़ता है तथा इसे फसल उत्सव के रूप में मनाया जाता है। यह चार दिवसीय कार्यक्रम होता है तथा सूर्य देव को समर्पित होता है। ये चार दिन भोगी पोंगल, थाई पोंगल, मट्टू पोंगल व कानुम पोंगल के रूप में मनाये जाते हैं। इन दिनों में यहाँ गीत, संगीत तथा नृत्य का कार्यक्रम चलता है। यहाँ के लोगों द्वारा पारंपरिक गायन 'कोलावई' का प्रदर्शन किया जाता है। इस अवसर पर यहाँ के लोगों के द्वारा मायिलाट्टम जिसे मोर नृत्य भी कहते है तथा 'कोलट्टम' जिसे छड़ी नृत्य भी कहते हैं का प्रदर्शन किया जाता है। पोंगल त्यौहार के दौरान यहाँ के लोगों के द्वारा यहाँ के पारंपरिक संगीत का वादन भी किया जाता है।

गणगौर

गणगौर का त्यौहार प्रमुख रूप से राजस्थान प्रान्त में मनाया जाता है। राजस्थान प्रान्त की संस्कृति में लोक संगीत का महत्वपूर्ण स्थान है। यहाँ के त्यौहारों में संगीत विशेष रूप से समाहित होता है। गणगौर, यहाँ के पारंपरिक त्यौहारों में से एक है। यह त्यौहार यहाँ की विवाहित स्त्रियाँ विशेष श्रद्धा भाव के साथ मनाती हैं। इस अवसर पर वे अपने पति के अच्छे स्वास्थ्य एवं दीर्घायु के लिए भगवान शिव एवं माँ पार्वती की पूजा व अर्चना करती हैं। इस अवसर पर विभिन्न पारंपरिक गीतों का गायन यहाँ की महिलाओं द्वारा किया जाता है। महिलाएँ इस अवसर पर पारंपरिक गणगौर नृत्य करती है तथा गौरी माता से प्रार्थना करती हैं। इस त्यौहार पर राजस्थान की संस्कृति एवं पारंपरिक संगीत का अनूठा समावेश देखने को मिलता है।

निष्कर्ष

भारत के पारंपरिक त्यौहार एवं यहाँ का संगीत यहाँ की संस्कृति के अभिन्न अंग है। ये दोनों यहाँ की संस्कृति के परिचायक हैं। भारतीय त्यौहारों एवं यहाँ के संगीत का प्राचीनकाल से अत्यन्त गहरा सम्बन्ध है। संगीत को यहाँ के त्यौहारों के प्राण के रूप में माना जाता है। भारत में संगीत के बिना त्यौहारों की कल्पना भी नहीं की जा सकती। जहाँ एक ओर धार्मिक त्यौहार लोगों की भक्ति एवं विश्वास की भावना को दर्शाते हैं वहीं ऋतु सम्बन्धी त्यौहार लोगों की खुशी एवं उत्साह को प्रदर्शित करते हैं परन्तु संगीत एक ऐसा माध्यम है जिसके द्वारा यहाँ के लोग किसी भी त्यौहार के अवसर पर अपनी भक्ति भावना एवं उत्साह को प्रकट करते हैं। अतः भारतीय पारंपरिक त्यौहारों में संगीत का प्रमुख स्थान है।

संदर्भ

1. भारतीय संस्कृति और परंपराएँ https://blogs.durlabhdarshan.com
2. Falk Song Fag: होली पर गाए जाने वाले फेमस फाग और गीत, आइए जानते हैं इनकी परंपरा https://www.patrika.com

3. श्रीवास्तव (प्रो.) हरिश्चन्द्र, राग परिचय भाग–2 प्रकाशकः संगीत सदन प्रकाशन, 134 साउथ मलाका, इलाहाबाद, 2008 पृ० सं०–196।
4. लोहड़ी आज, प्यार और एकता का प्रतीक है यह त्यौहार, Navbharattimes.indiatimes.com
5. दिव्यता की लय और धुनः गणेश चतुर्थी का उत्सव, https://.classicalclaps.com
6. पोंगल उत्सव। तमिलनाडु में त्यौहार और कार्यक्रम https://www.tamilnadutourism.tn.gov.in
7. नवरात्रिः देवी का उत्सव, नृत्य और संगीत divyaindia.in